www.thearyasamaj.org

Date of Publication: 25 December 2013

कमल ज्योति

(मासिक पत्र)

वर्ष-7, अंक-10 जनवरी 2014 विक्रमी संवत् 2070 सृष्टि संवत् 1960853113 एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये आजीवन शुल्क 1100/-रुपये

ओ३म्

संस्थापक

भजनप्रकाश आर्य

संरक्षक

ओमप्रकाश हसीजा

प्रधान सम्पादक

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
चलभाष : 9810084806

सम्पादक

एल.आर. आहूजा
आचार्य शिव नारायण शास्त्री
अतुल आर्य
चलभाष : 9718194653
दूरभाष : 011-27017780

सहयोगी सम्पादक

प्रिंसीपल हर्ष आर्या
चलभाष : 9999114012
राजीव आर्य
चलभाष : 9212209044
नरेन्द्र आर्य 'सुमन'
चलभाष : 9213402628

हे वरुण! हमें अनृत=असत्य से मुक्त करो

बहूवीश्दं राजन् वरूणानृतमाह पूरुषः।
तस्मात् सहस्त्रवीर्य मुञ्च नः पर्यहसः॥

- अथर्वः 19.44.8

ऋषिः-**भृगुः**॥ देवता-**वरूणः**॥ छन्दः-**अनुष्टुप**॥

शब्दार्थ-वरूण=हे पापनिवारक! **राजन**=हे सच्चे राजा! **पूरुषः**=मनुष्य **इदम्**=यह (तुच्छ-तुच्छ) **बहु**=बहुत **अनृतम्**=झूठ **आह**=बोलता है। **तस्मात्**=उस **अंहसः**=पाप से, **सहस्त्रवीर्य**=हे अपरिमित वीर्यवाले! तू **नः**= हमें **परिमुंच**=सब ओर से मुक्त कर दे।

विनय-हे सच्चे राजा, हे पापनिवारक! मनुष्य बहुत अनृत बोला करता है और बड़ी तुच्छ-तुच्छ बातों पर अनृत बोला करता है। प्रातः से लेकर रात्रि तक एक दिन में ही न जाने कितनी बार असत्यभाषण करता है। हम मनुष्यों का जीवन इतना अनृतमय हो गया है कि प्रायः हम लोग यह अनुभव ही नहीं करते कि हम कितना अधिक असत्य बोलते हैं। यह अनुभव तो तब मिलता है जब मनुष्य सचमुच झूठ से घबराने लगता है और सत्य ही बोलने के लिए सदा सचिन्त रहने लगता है। उस समय मुख से निकली अपनी एक-एक वाणी पर पूरा-पूरा निरीक्षण और विवेचन करने पर उसे पता लगता है कि वह सूक्ष्म रूप में कितने अधिक असत्य बोलता है। सच तो यह है कि हममें से जो लोग अपने को सत्य बोलनेवाला समझते हैं वे भी असल में बहुत असत्य बोलते हैं। जो पूरा सत्यवादी होगा, पतंजलि, व्यास आदि ऋषि-मुनियों के कथनानुसार, उसकी वाणी में तो ऐसा तेज आ जाएगा कि वह जो कुछ कहेगा, वह सच्चा हो जाएगा। वह क्रिया और फल से समन्वित हो जाएगा। यदि वह किसी को कहेगा कि 'तू नीरोग हो जा' तो वह नीरोग हो जाएगा, अर्थात् जो कार्य हम हाथ-पैर आदि की स्थूल शक्ति से सिद्ध करते हैं वह पूरे सत्यवादी पुरुष की वाणी की शक्ति से हो जाता है, अतः वास्तव में हममें से ऊँचे-ऊँचे पुरुष भी अभी सर्वथा असत्यरहित नहीं हुए हैं।

हे सहस्त्रवीर्य! इस असत्य से तुम्हीं हमें बचाओ। हमने आत्मनिरीक्षण करते सदा देखा है कि हम सदैव तुच्छ भय, लोभ, आसक्ति आदि के कारण ही, सदैव अपनी कमजोरी, निर्बलता, वीर्यहीनता के कारण ही असत्य बोलते हैं, अतः हे अपरिमित वीर्यवाले! तुम हमें ऐसे वीर्य और बल से भर दो कि हम सदा निधड़क होकर सत्य ही बोलें, झूठ बोल ही न सकें, झूठ बोलने की कभी आवश्यकता ही अनुभव न करें। सचमुच आपकी सहस्त्रवीर्यता का ध्यान कर लेने पर हममें इतना बल-संचार हो जाता है कि हम अनुभव करने लगते हैं कि हम भी कभी पूरे सत्यवादी हो जाएँगे। इस तरह, हे सहस्त्रवीर्य! तुम हमें सदा असत्य से छुड़ाते रहो, असत्य के पाप से हमें सब ओर से मुक्त करते रहो।

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे

सामवेद संहिता

–श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा

इन्द्रोयेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। अर्कस्य योनिमासदम्॥
तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम्।
सं त्वा मृजन्त्यायवः ॥
रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्तु वरूणः कवे। पवमानस्य मरुतः॥785॥

हे आह्लादक प्राण शक्ति, इन्द्र प्रभु हित आता जा।
अमृतमय और मधुर बना तू, ऋत के पास ले जाता जा॥
आह्लादक रस पैदा करता, वाणी का जो ज्ञाता है।
साधक उसको शुद्ध बनाते, जीवन में जीवन आता है॥
हे क्रान्तदर्शी तुझे बना कर, आनन्दरस को पीते हैं।
अर्यमा और वरूणा शक्तियां, मिलतीं जिससे जीते हैं॥

मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि ।
रयिं पिशङ्ग बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि॥
पुनानो वारे पवमानो अव्यये वृषो अचिक्रदद्वने।
देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि ॥786॥

हे पवमान चतुर तुझे जब, मन मन्दिर में शुद्ध बनाते।
शुभ कर्मों की कर प्रेरणा, सुन्दर धन सम्पत्ति लाते॥
ज्ञानवस्त्र से छना हुआ, सोम भक्तिमय तब में आता।
इन्द्रिय स्वामी इन्द्र को पा, ज्ञान रश्मियां चमकाता॥

एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम्। समादित्येभिरख्यत॥
समिन्देणोत वायुना सुत एति पवित्र आ। सं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥
स नो भगाय वायवे पूष्णो पवस्व मधुमान्।
चारूमित्रे वरूणे च॥787॥

हृदयवासी परमानन्द को, दसों इन्द्रियाँ शुद्ध करें।
आदित्य शक्ति सम यश वाले में, दिव्यगुण उद्बुद्ध करें॥
बना हुआ यह परम रसीला, हृदय सरोवर भर देता।
इन्द्र प्राणशक्ति देकर, प्रेरक को प्रेरक कर देता॥
वह अमृतमय आनन्द सदा, भोग्य-शक्ति का दान करे।
देकर हम को पोषण शक्ति, मित्र वरूण सम बलवान करे॥

रेवतीर्नःसधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम॥
आ घ त्वावान् त्मना युक्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवीयानः।
ऋणोरश्रं न चक्रयोः ॥
आ यद् दुवः शतक्रतवा कामं जरितृणाम्।
ऋणोरक्षं न शचीभिः ॥788॥

आत्मा के साथ मेरी, इन्द्रियाँ बलवान हों।
आनन्द पाकर हम रहें, इन से सदा धनवान हों॥
हे शत्रुनाशक संयम शक्ति, भक्तों को लक्ष्य दिखा।
रथ का पहिया धुरि चलाए, वैसे अपना भक्त चला॥
ज्ञान-कर्म-शक्ति के स्वामी, भक्त सम्पत्तिवान कर।
रथ के अरे धुरि चलाते, हमको लक्ष्य प्रदान कर॥

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यवि द्यवि॥
उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः॥
अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम।
मा नो अति ख्य आ गहि॥789॥

ग्वाले को गैया दूध पिलाए, इन्द्र हमें फल दान करे।
अपना आपा अर्पण करें, हमको वह मतिमान करे॥
हे परमानन्द के पाने वाले, हमको अपना संग दे।
भक्त जनों का आनन्द तू, ज्ञान-प्रभा में रंग दे॥
तेरा ऊँचा ज्ञान मिले, तू ही हमें स्वीकार कर॥

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव।
महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम्।
देवी जनित्र्यजीजनभ्दद्रा जनित्र्यजीजनत्॥
दीर्घ ह्यडकुशं यथा शक्ति बिभषि मन्तुमः।
पूर्वेणा मधवन् पदा• वयामजो यथा यमः।
देवी जनित्र्यजीजनभ्दद्रा जनित्र्यजीजनत्॥
अव स्म दुर्हणायतो मर्तस्य तनुहि स्थिरम्।
अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माँ अभिदासति।
देवी जनित्र्यजीजनभ्दद्रा जनित्र्यजीजन् ॥790॥

उषा का आलोक चारों, ओर जब है फैल जाता।
हे इन्द्र पृथिवी लोक को, तू ही है जगमगाता॥
देवी मां ने तुझे बनाया, तू बड़ो बड़ों का स्वामी है।
सब का मंगल करने वाली, का तू ही अनुगामी है॥
हे वीर मनस्वी इन्द्र तेरे, अंकुश की शक्ति दूर है। इन्द्रियों का
तू ही शासक, तुझ में ज्ञानशक्ति भरपूर है।
देवी मां ने तुझे बनाया, तेरा अलौकिक रूप है।
प्रकट किया है उसने तुझ को, जो भूपों का भूप है॥
हे राजा तू दुष्ट जनों को, नीचा सदा दिखाया कर।
अपनी शक्ति से करो पराजित, भक्तों को सदा बचाया कर॥
देवी मां ने तुझे बनाया, जो मंगल जग का करती है।
तुझ को उसने जन्म दिया, जो कष्ट सभी के हरती है॥

परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्।
मदेषु सर्वधा असि॥
त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु प्र जातमन्धसः। मदेषु सर्वधा असि॥
त्वे विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत ।
मदेषु सर्वधा असि ॥791॥

वचनों से बंधकर तू आता, मन को मगन किया करता।
तू है परमानन्द सोम, सब को आनन्द दिया करता॥
हे सोम ज्ञान-प्रभा का दाता, और क्रांति का नेता तू।
ज्ञान-रूप से उत्पन्न होकर, सब को अमृत देता तू॥
दिव्यगुणों से दिव्य बनें सब, अंग तुझी को पीते हैं।
मगन हुए आनन्दसुधा में, गति का जीवन जीते हैं॥

[क्रमशः]

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे

जीवन-मृत्यु का चिन्तन

-डॉ. महेश विद्यालंकार

आस्तिकता से मनुष्य का कर्तापन और अहंकार छूटता है। अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु और पतन का कारण है। जब इन्सान प्रभु की रचना और विनाशलीला को तत्त्वज्ञान से देखता है, तो उसकी आँखे खुली की खुली रह जाती हैं। अनन्त सृष्टि में मानव का क्या अस्तित्व है? उसे किस चीज का अहंकार है? तन, मन, धन तथा जिस अपनी बनाई दुनिया पर मनुष्य इतना इतराता है, उसको उससे छूटते देर नहीं लगती है। प्रभु के सान्निध्य से मानव का अहंकार हटता और छूटता है। जीवन को सुखी, शान्त, सन्तुष्ट, प्रसन्नचित्त, सन्तुलित बनाने तथा पारलौकिक चिन्तन के लिए आस्तिकता व आध्यात्मिकता महत्वपूर्ण आधार हैं।

मोक्ष-प्राप्ति केवल मनुष्य-योनि में ही संभव है। मानवजीवन की सबसे बड़ी महत्ता व विशेषता यही है। यह जीवन मोक्ष का द्वार है। जीव को मोक्ष प्राप्त करने के लिए मनुष्यजन्म लेना ही पड़ेगा। संसार के बन्धनों, दुःखों, कष्टों, जन्ममरण के चक्र से छूटने का मानवजीवन सुनहरा अवसर है। गीता कहती है-

अनेकजन्मसंसिद्धिः।

जीवनमुक्त होने के लिए अनेक जन्म लग जाते हैं। भौतिक जगत् में जीवन का कोई विशेष उद्देश्य निर्धारित नहीं है। भौतिक जीवनदर्शन मन, इन्द्रियों तथा भोगों तक ही सीमित है। भारतीय चिन्तन में जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य ईश्वर-प्राप्ति और मोक्ष बताया गया है। ज्ञानी जन अपने जीवनोद्देश्य को ध्यान में रखकर वैसा ही आचरण करते हुए जीवन को उन्नति की ओर ले जाते हैं जिनके सामने जीवन का कोई लक्ष्य नहीं होता, ऐसे लोग जीवनभर और ठोकरें खाते, रोते-पीटते जीवन पूरा कर चले जाते हैं।

सभी धर्मशास्त्र एवं महापुरुष सचेत करते हैं- जीवन का लक्ष्य बनाओ। उद्देश्यपूर्ण ढंग से जीवन को जियो। मानवजन्म की कीमत समझो। जो प्राप्त जीवन है, उसे सँभालना और अपने लक्ष्य की ओर मोड़ना है जो बीत गया, सो बीत गया, बाकी उम्र को जागरूकता, ज्ञानपूर्वक तथा समझदारी से व्यतीत करना है। धर्म, अर्थ, काम ये तीनों ही मोक्षप्राप्ति के साधन हैं। इनसे निकलकर अन्तिम पड़ाव मोक्ष तक पहुँचना है। तभी इस मानवजीवन का महत्व व सार्थकता है। अधिकांश लोगों का पूरा जीवन अर्थ व काम में निकल जाता है। उन्हें बोध भी नहीं होता है कि यह अमूल्य जीवन किसलिए मिला था? इसका क्या उद्देश्य है? इसकी अन्तिम मंजिल क्या है? आत्मा की असली चाह क्या है? आत्मा किसे और किस चीज को पाने के लिए जन्म-जन्मान्तर से भटक रही है? आत्मा क्यों नहीं स्थायी रूप से सांसारिक भोगपदार्थों में सुखी व आनन्दित होती है? सत्य है-संसार के किसी भौतिक पदार्थ में वह शक्ति, क्षमता व योग्यता नहीं है, जो आत्मा को चिरकाल तक आनन्दित कर सके। आत्मा भोग-पदार्थों से राजी नहीं होती है। जब आत्मा सभी प्रकार के दुःखों, जनम, मृत्यु, जरा, व्याधि आदि के बन्धनों से छूटकर प्रभु के अनन्त आनन्द में विचरण करती है, वही स्थिति मोक्ष कहलाती है। मुक्तावस्था में जीव शरीर के बन्धनों से मुक्त रहता है। पुनः मुक्तावास्था से जीव संसार में आता है। ऐसी पवित्र व पुण्यात्माएँ जगत् में आकर अपने अलौकिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संसार का मार्गदर्शन करती हैं। ऐसी ही पवित्रात्माएँ महापुरुष व युगपुरुष कहलाती हैं।

संसार और जीवन में उतार-चढ़ाव, दुःख-सुख, उलझनें, समस्याएँ आदि आते ही रहेंगे। हमें तो समझदारी तथा ज्ञानपूर्वक जीना है-ज्ञानी और अज्ञानी में अन्तर यही है कि ज्ञानी दुःख को सुख बनाने की कला जानता है परन्तु अज्ञानी सुख को दुःख बनाकर जीवन जीता है-

भरोसा कर तू ईश्वर का, तुझे धोखा नहीं होगा।
यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।।

बढ़ती उम्र के साथ-साथ ज्ञान, विवेक, वैराग्य, आत्म-परमात्म-चिन्तन, स्वाध्याय, सेवा, त्यागभाव आदि भी बढ़ाते चलो। इनसे जीवन शान्त, सन्तुलित तथा व्यवस्थित बना रहता है। मनुष्य को धीरे-धीरे अकेले और अलग रहने का अभ्यास कर लेना चाहिए। इससे इन्सान दुःखी, परेशान तथा बेचैन नहीं होगा। अपने को हर हालात, परिस्थिति और समय के अनुसार ढाल लेना सुखी जीवन के सूत्र हैं। नया संसार नहीं मिलेगा। जो है, जैसा है, इसी से निभाना और गुजारा करना है। सदा शुभ और मंगलकारी विचार एवं सोच बनाये रखने से निराशा नहीं आती है। नकारात्मक सोच वाले नास्तिक सदा भयभीत व चिन्तित रहते हैं। सन्तोष जीवन का सबसे बड़ा धन है। इसी जीवन में मुझे जो कुछ भी मिला है, वह प्रभुकृपा से मिला है। जितना प्राप्त है, मेरे लिए पर्याप्त है। तृष्णा की आग सन्तोष के पानी से बुझ सकती है। आदमी को सोचना चाहिए-जब मैं पैदा हुआ था, तब मेरे पास क्या था? आज क्या नहीं है? हम अपने को नहीं देख पा रहे हैं। अपने को देखना ही सच्चा आत्मज्ञान है। गीता कहती है-ज्ञान से बढ़कर जीवन सुधारने वाली अन्य कोई चीज नहीं है। ज्ञान जीवन को संभालता है। जीवनयात्रा में ज्ञान सबसे बड़ा साथी है। मगर ज्ञान की बिजली

www.thearyasamaj.org

जीवन में कभी-कभी चमकती है, बाकी समय तो अन्धेरा ही रहता है। असली ज्ञान का प्रकाश भाग्यशाली ही पाते हैं। एक विचारक ने सुखी जीवन के लिए लिखा है-दिन ऐसा गुजारो कि रात को चैन की नींद सो सको। जिनका दिन पाप, अधर्म, बुराई तथा दुर्गुणों में निकलता है, उन्हें रात को चैन की नींद नहीं आती है। रात ऐसी हो कि जब सबेरे उठो, तो चेहरे पर तरो-ताजगी, प्रसन्नता व नीरोगता हो। जिन्हें रात को नींद नहीं आती है, उनका शरीर सुस्त व रोगी बना रहता है। जवानी ऐसी गुजारो कि बुढ़ापे में पछताना न पड़े। जब जवानी गलत संगत, विचारों तथा कर्मो में निकलती है, तब आदमी बुढ़ापे में पछताता है। बुढ़ापा ऐसा गुजारो कि किसी के आगे हाथ फैलाना न पड़े। व्यक्ति को जीवन की योजना इस ढंग से बनानी चाहिए कि बुढ़ापे में किसी से माँगना न पड़े और बुढ़ापा शान्ति, सन्तोष, नीरोगता एवं प्रसन्नता में निकले।

भारतीय जीवनदर्शन कहता है-संसार एक धर्मशाला है। यहाँ कोई आ रहा है और कोई जा रहा है। यहाँ स्थायी व अमर कोई नहीं है। जीव यात्री हैं और जीवन एक यात्रा है। जितना सामान कम होगा, यात्रा उतनी ही सुखद होगी। जरूरत से जो भी चीज ज्यादा होगी या हम जिसका जरूरत से ज्यादा उपभोग करेंगे, वही दुःखदायी बन जायेगी। सुखी, शान्त और सन्तुष्ट वही है, जिसने अपने जरूरतों को बढ़ने नहीं दिया है। सिर के सफेद बाल ज्ञान, विवेक तथा वैराग्य के प्रतीक हैं। ये हमें समझाते हैं-ठहरो, समझो, ज्ञानपूर्वक जीवन को जियो। काले कर्म बहुत कर लिए, अब सफेद कर्मो की सोचो। बुद्धिमत्ता इसी में है कि चीजों को मत देखो, जरूरत को देखो, सुखी हो जाआगे। बिना आवश्यकता का संग्रह चिन्ता, तनाव व परेशानी में डालता है। अत्यन्त भौतिकता तन, मन, धन, परिवार, समाज आदि को विकृत कर दुःखदायी बनाती है।

सुखी, स्वस्थ तथा लम्बी उम्र के लिए तत्त्वज्ञान कहता है कि अपनी दिनचर्या, खानपान, विचारों तथा मन को सन्तुलित व व्यवस्थित बनाओ। जिसकी सुबह ठीक होगी, उसकी शाम भी ठीक होगी। शराबी आदमी की शाम होती है, सुबह नहीं होती है। तमोगुणी सोचता है, कब शाम हो। सात्विक ज्ञानी सोचता है कब ब्रह्ममुहुर्त और सबेरा हो। सुबह का जागना, जीवन का जागरण बन जाता है। सौ दवा की एक दवा, सबेरे की हवा है। स्वस्थ जीवन के लिए जल्दी सोना, जल्दी उठना, प्रकृति के अनुकूल दिनचर्या एवं खान-पान रखना ये मूल मन्त्र हैं। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए उपवास और मानसिक शान्ति के लिए मौन रखना उपयोगी हैं। नियमित व्यायाम तथा ध्यान, तन व मन को स्वस्थ बनाए रखते हैं। सदा मन को सन्तुलित बनाये रखना तथा मन की शान्ति को भंग न होने देना सुखी व शान्त जीवन की प्रेरणाएँ हैं। श्रेष्ठ बनने के लिए अच्छे लोगों की संगति और प्रेरणाएँ जीवनदायक ग्रन्थों के स्वाध्याय से जीवन सन्तुलित बना रहता है। सद्गन्थों का पाठ हमारी जीवन-शैली का अंग है। हमारी जीवन-पद्धति में दैनिक जीवन का आरम्भ प्रभुस्मरण से करने की परम्परा रही है। इससे मनुष्य दिनभर पाप, अधर्म तथा बुरी बातों से बचा रहता है।

जिसका प्रभु प्यारे से संग है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है।

आम आदमी को समय के सदुपयोग का ढंग नहीं मालूम है। समय इतना ही है, उसमें कुछ भी कमी या बढ़ोत्तरी नहीं होती है। जिस काम में हमारी इच्छा, रूचि और प्रवृत्ति होती है, वह हो जाता है। घूमना, फिरना, बाजार, पार्टी, सिनेमा आदि में चाह और रूचि है, तो सबके पास इन कामों के लिए समय है। परन्तु सत्संग, कथा, यज्ञ, सेवा, परोपकार आदि में हमारी प्रवृत्ति, मन व रूचि नहीं है, तो हम समय का बहाना बनाते हैं। जो व्यक्ति वक्त को काटता है, बाद में वक्त उन्हें काटता है। समझदारी इसी में है कि हम उम्र के साथ-साथ अपनी जीवनपद्धति को बदलें। उम्र के इस पड़ाव तक आते-आते जीवन और जगत् का यथार्थ स्वरूप व तत्त्वज्ञान समझ में आ ही जाना चाहिए। बाद में पछताने से कुछ हाथ नहीं लगता है। जिन्दगी हमें बहुत कुछ सिखाती है। होश तथा समझ से जीवन जीना आ जाये, तो जीवन सफल व स्वर्ग बन जाता है। उत्तम विचारों तथा सोच से प्रभु का धन्यवाद करते हुए सुन्दरता और उद्देश्यपूर्ण ढंग से जीवन जीना चाहिए। बुढ़ापा शान्ति, सन्तोष एवं नीरोगतापूर्वक जाने का सन्देश देता है। यह मानवजीवन जीव को प्रभु द्वारा दी गई सबसे ऊँची पदवी है। जाते हुए अपने कर्मो की सुगन्ध जगत् में छोड़कर जाना ही अमर जीवन की पहचान है। आज संसार जिन ऋषि-मुनियों, सन्तों, महापुरुषों आदि को स्मरण किये जाते हैं। कबीरदास की ये प्रेरक पंक्तियाँ प्रेरणा और सन्देश दे रही हैं-

कबीरा तुम पैदा भये, जग हँसा तुम रोय।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हँसो जग रोय।।

अपनी जीवनयात्रा को शान व सम्मान से पूरा करो। शान्ति और सन्तोष से शरीर को छोड़ो। अपने पीछे धर्म, कर्म, पुण्य, सेवा, परोपकार आदि की अमर कहानी छोड़ जाओ। यही सफल, सार्थक तथा उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की कला हैं जीवन का यही प्रेरक उद्देश्य और अमर सन्देश है।

(क्रमशः)

www.thearyasamaj.org

Contd. from Last Issuse

Eradication of Superstitions

GURU

—Madan Raheja

An important doctrine is associated with this. The soul (8) needs the assistance of the nature (0) to achieve his ultimate goal- God (1) Nature is situated in between God and the soul. As long as the soul remains attached to worldly things and shows arrogance by having these possessions, his (mans) false pride will progressively drag him downwards and will not allow the soul to have communion of God and when the soul is detached from nature, realisation of God becomes natural. So soul (8) in the company of god (1) becomes 8+1=9 which is a symbol of fullness, as number 9 is the largest number and all other numbers are lower than# 9 i.e. between 1 & 9. A person who does not understand the importance of numbers, he/she is ignorant (0) like inanimate things. Self-Realisation is important for the proximity & realisation of God then only he/she becomes blissful in communion of God.

Another noticeable point about the numbers whose total is 9 and when number 9 is deducted from them, even then the number 9 remains. For example: 81-9=72, 72-9=63 & so, on. so number nine teaches us to be fully aware, awake and alert. A 'Mala' string of beads (a means adopted for 'Japa'-repetition of God`s name) contains 108 beads in it with this aspect in mind only. If one wants to communion with God then he/she has to remove the hurdle of insensate nature. As mentioned earlier God stands for#1, nature represents#0 and the soul symbolizes#8.

A person who remains involved with infatuation & deeply attached to the worldly affairs/things gets degraded slowly & slowly that can be easily understood by the following figures: 8x2=16=7, 8x3=24=6, 8x4=32=5, 8x5=40=4, 8x6=48=12=3 & so on.

Now the learned readers can visualise themselves from these analyses, the more a man (8) move towards materialism (0) gets away from the God (1). One should practice the eight steps of the 'Ashtanga Yoga', without any short cuts, detachment will follow automatically. This is the key to have communion with God. This is the philosophy of the number 108.

Latest discovery: The yoga tradition is full of such coincidences. Take for instance the mala many yoga students wear around their neck. Since these rosaries are used to keep track of the number of mantras a person is repeating, students often ask why they have 108 beads instead of 100. Part of the reason is that the mala represent the ecliptic, the path of the sun and moon across the sky. Yogis divide the ecliptic into 27 equal section called Nakshatras/Galaxies, and each of these into four equal sectors called Padas, or "steps," marking the 108 steps that the sun and moon take through heaven.

According to Professor Subhash Kak of Louisiana State University (USA), points out yet another coincidence: The distance between the earth and the sun is approximately 108 times the sun`s diameter. The diameter of the sun is about 108 times the earth`s diameter. And the distance between the earth and the moon is 108 times the moon`s diameter.

Could this be the reason the ancient sages considered 108 such a sacred numbers? If the microcosm (us) mirrors the macrocosm (the solar system), then maybe you could say there are 108 steps between our ordinary human awareness and the divine light at the center of our being. Each time we chant another mantra as our mala beads slip through our fingers, we are taking another step toward out own inner sun.

(For more knowledge of this subject, one should study of the Vedic literature and contact the scholars of the Vedas)

Superstition#4: Only a spiritual guru gives a true "Naam Daan' i.e. a sacred formulae or God`s name for recitation & upliftment!

Comments: This sort of thinking can only be termed as Pseudo knowledge. First we should try to peep into the personal lives of those so-called preceptors and then decide using our own intelligence & logic, whether they are worthy of being adopted as our guide or not? A few very important questions is this respect are as follows:

- What do they demand directly or indirectly for passing on their sacred formulae to their disciples or to the people?
- What is their mode of dealing with the public in this connection?
- Why do they talk about these names of God/deity, in a secret manner?
- Why they advice their disciple, not to disclose the sacred formulae (God`s name) to others?

(To be Continued)

www.thearyasamaj.org

सुभाष चन्द्र बोस

सेवा कार्य: सेवा परम धर्म है जो योगियों के लिए भी अगम्य है। नगर में हैजा फैल गया। इसने नगर के अनेक भागों को अपनी चपेट में ले लिया। लोग निरन्तर कालकवलित होने लगे। सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी रही। नगर के लोगों का हाहाकार सुनकर किशोर सुभाष से रहा न गया। उन्होंने अपने साथियों की टोली बनाई और गन्दी बस्तियों में जहाँ हैजे का प्रकोप अधिक था, वहाँ जाकर सफाई, औषध वितरण और सेवा करने लगे। अमीरों के बालकों को सेवा करते देख निर्धन बस्ती के लोगों ने समझा कि अमीरों के ये बच्चे हमारा मजाक करने और जले पर नमक छिड़कने के लिए आते हैं। नगर के प्रसिद्ध गुण्डे हैदर के साथ कुछ लोगों ने इस टोली का विरोध शुरु कर दिया और उनके सेवा कार्य में बाधा डालना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु एक दिन हैजे ने हैदर के घर पर भी आक्रमण कर दिया। वह वैद्य-डाक्टरों के पास दौड़ता हुआ गया परन्तु कोई नहीं आया। निराश होकर जब वह घर लौटा तो क्या देखता है कि बालकों का वही दल जिसका वह विरोध करता था, उसके घर की सफाई में जुटा हुआ है। कुछ सफाई कर रहे हैं और एक रोगी को औषधि दे रहा है, दूसरा उसे आश्वासन दे रहा है। बालकों के इस निश्छल सेवाभाव को देख उस गुण्डे का जी भर आया। वह एक कोने में बैठ कर फूट-फूट कर रोने लगा। कल के नेता सुभाष ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा भाई! तुम्हारा घर गन्दा था इसीलिए घर के लोगों को हैजे ने दबाया। अब हमने उसकी सफाई कर दी है। एक-दूसरे के सुख-दुख में काम आना तो मानव का कर्तव्य है। इतना सुनकर हैदर खाँ ने उठकर सुभाष के पैर पकड़ लिए और बोला, नहीं-नहीं घर के साथ मेरा मन भी मलिन था। आपकी सेवा ने मेरे मन के मैल का धो दिया है।

पराधीनता की चुभन:- पराधीनता हर मनस्वी पुरुष को अखरती है। बन्दी बन जाना घोरतम यातना है। जब जंगली हाथियों के किसी टोल को घेर-घार कर बन्दी बना लिया जाता है, तब वे कितना छटपटाते हैं। छोटी आयु के निरीह गज शिशु तो जल्दी ही पराधीनता के अभ्यस्त हो जाते हैं, परन्तु वयस्क और प्रौढ़ हाथी बन्दी बनाये जाने का जी जान से विरोध करते हैं। पैरों और गर्दन में बँधे रस्सों को तोड़ डालने के लिए वे इतना जोर लगाते हैं कि रससे की रगड़ से दो-दो इंच गहरे घाव हो जाते हैं। कोई तो भूखे रह कर प्राणी ही दे देते हैं। राष्ट्रनेता सुभाष को पराधीनता की अनुभूति नये पकड़े गये यूथपति गजराज की सी थी, जिसे पराधीनता के कारण न दिन में चैन था, न रात में नींद। एक ही धुन थी कि जैसे भी हो, भारत भूमि दस्युओं के चंगुल से मुक्त हो।

चिड़ियाघर में पिंजड़े में बन्द बाघ तो सभी ने देखा होगा, वह कितना बैचेन रहता है? एक छोर से दूसरे छोर तक चक्कर काटता रहता है। सुभाष की स्वाधीनता के लिए व्यग्रता कुछ ऐसी ही थी। यह देह लक्ष्य की पूर्ति के लिए ही है, उसमें नष्ट होना हो तो कल नहीं, आज नष्ट हो जाये।

साम्प्रदायिकता से दूर:- सुभाष ने मन में साम्प्रदायिकता को कभी स्थान नहीं दिया। आजाद हिन्द फौज में हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी थे। सभी देश को स्वाधीन कराने के लिए प्राणोत्सर्ग करने को उद्यत थे। ठीक ऐसे ही लोग गांधी-नेहरू गुट को भी उपलब्ध थे। परन्तु गाँधी-नेहरू गुट के पास करने को कुछ नहीं था, स्वाधीनता संग्राम का कोई कार्यक्रम नहीं था। सत्याग्रह सफल हो कर भी गांधी जी की अदूरदर्शिता के कारण विफल हो गया था। सारे देश में निराशा-हताशा का वातावरण था। तभी सन् 1939 से पहले द्वितीय विश्व युद्ध के बादल बनने लगे। जर्मनी प्रथम विश्व युद्ध में हुई पराजय का बदला लेने के लिए अपनी शक्ति बढ़ा रहा था और एक के बाद एक प्रदेश हथियाता जा रहा था। जब चैकोस्लोवाकिया पर उसने कब्जा किया, तब इंग्लैंड और फ्रांस के सब्र का प्याला लबालब भर गया। स्पष्ट था कि यदि अब जर्मनी ने किसी नये प्रदेश पर कब्जा किया जो युद्ध होगा।

गाँधी जी से मतभेद:- सुभाष इस संभावित युद्ध के सुअवसर का लाभ भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति करने के लिए उठाना चाहते थे। यहाँ गांधी जी से उनका सैद्धान्तिक टकराव हुआ। सुभाष आजादी के लिए सब कुछ कर गुजरने को तैयार थे, परन्तु गांधी जी वणिक् बुद्धि से हिसाब लगा कर चलने वाले नेता थे। उन्होंने अहिंसा का कवच धारण किया हुआ था, जो अंग्रेजों के कोप से उनकी रक्षा करता था। यही कवच उन्हें अंग्रेजों के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करने से रोकता था। यहाँ से उनका और गांधी जी का रास्ता अलग हो गया।

अनमोल वचन

❖ अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाओ, और इसके बाद अपना सारा शारीरिक और मानसिक बल जो ईश्वर ने तुम्हें दिया है, उसमें लगा दो। **-कालाईल**

❖ जिसको लगन है वह साधन भी पा जाता है, यदि नहीं पाता तो वह उन्हें पैदा करता है। **-चैंनिग**

❖ लगन को काँटो की परवाह नहीं होती। **-प्रेमचन्द**

www.thearyasamaj.org

पेड़ पर लगनेवाली मिठाई-खजूर

मिठाई किसको नहीं अच्छी लगती? यद्यपि डॉक्टरों और दंतचिकित्सकों का कहना है कि मिठाइयाँ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं, क्योंकि वे धीरे-धीरे दांतों को कमजोर करती हैं। अब प्रश्न उठता है कि क्या कोई और ऐसी वस्तु है जो मिठाई के समान स्वादिष्ट हो और साथ ही पौष्टिक हो और दांतों को भी हानि न पहुंचाती हो? खाद्यविशेषज्ञों का उत्तर है-खजूर।

खजूर भारत में काफी सस्ती और बहुतायत से मिलती है। यद्यपि भारत में यह काफी परिमाण में पैदा होती है, लेकिन बढ़िया खजूर अरब से ही आती है। कहा जाता है कि अरबवासी केवल खजूरों और ऊँटनी के दूध के सहारे महीनों रेगिस्तानों में घूम सकते हैं। प्रतिदिन के भोजन में प्राकृतिक खाद्य वस्तुओं का बहुत महत्व है, क्योंकि प्राकृतिक खाद्यों में शरीर को पुष्ट बनाने के तत्व होते हैं जो स्वास्थ्य और जीवन के लिए बहुत आवश्यक हैं। इस प्रकार जो भी भोजन अपने असली रूप में हो और साफ करने और पकाने में जिसका प्राकृतिक तत्व नष्ट न हुआ हो वह मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है।

खजूर बहुत उत्तम प्राकृतिक भोजन है। आटा, दाल, चावल आदि के भोजन के समान ही यह भी अपने में पूर्ण भोजन है। किसी ने इसको 'सूर्य का संगृहीत प्रकाश' भी कहा है। वृक्षों पर पकने के लिए इसको सूर्य की कड़ी गर्मी की आवश्यकता होती है। अरब देश की कहावत है ''खजूर के पेड़ का सिर आग में और पैर पानी में होना चाहिए।'' भारत में भी खजूर का वृक्ष प्राय: रेतीली जमीन में या रेगिस्तान में होता है और इसकी जड़ें जमीन में गहरी चली जाती हैं और वहां से पोषक-तत्व प्राप्त करती है। खजूर बड़ों और बच्चों दोनों के लिए बहुत लाभदायक खाद्य है क्योंकि इसमें बड़े अनुपात में प्राकृतिक शक्कर होती है जिसको पचाने के लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है और जो शीघ्र ही शरीर में मिल जाती है। खजूर में ऐसी शक्कर होती है जो शीघ्र ही पचने के अतिरिक्त चर्बी भी नहीं बढ़ाती और इस तरह यह मिल की चीनी और उसकी बनी मिठाइयों के दोषों से मुक्त होती है।

खजूर में प्रोटीन आदि ऐसे तत्व भी होते हैं जो शरीर के विकास के लिए बहुत लाभदायक हैं। खजूर में लोहा और चूना आदि खनिज तत्व होते हैं जो खून बढ़ाते हैं और हड्डियों और दांतों को पुष्ट करते हैं। इसके अतिरिक्त उसमें मैग्नीशियम, सोडियम, पोटाशियम, फास्फोरस आदि खनिज तत्व होते हैं। खजूर में काफी परिमाण में विटामिन 'ए' 'बी' 1 'बी' और 'बी काम्पलेक्स' होते हैं लेकिन विटामिन 'सी' और 'डी' बहुत कम परिणाम में पाये जाते हैं। खजूर को दूध के साथ खाया जाए तो पूरा भोजन बन जाता हैं। पांच सौ ग्राम खजूर और एक लीटर दूध, एक व्यक्ति के लिए एक दिन का न केवल पर्याप्त बल्कि उच्च कोटि का भोजन है।

खाद्य महत्व के अतिरिक्त, खजूर की एक खूबी यह भी है कि यदि इसे नियमित रूप से खाया जाए तो यह कब्ज भी दूर करती है। नियमित भोजन के रूप में खजूर को अपनाने से पहले यह देख लेना आवश्यक है कि वह अच्छी और साफ-सुथरी हो। हो सकता है, एक साथ ज्यादा खजूर खाने से उसे पचाने में कठिनाई हो। इसलिए सर्वोत्तम तरीका यह है कि भोजन के साथ थोड़ी मात्रा में खजूर ली जाए और खूब चबाकर खायी जाए।

माँ

जिस दिल में माँ प्यार नहीं।
पत्थर दिल है वो इंसान नहीं।।
माँ जैसी ममता की छाया।
दे सकता वो भगवान नहीं।।

है माँ का दर्जा बहुत बड़ा।
माता ही स्वर्ग के जैसी है।।
माँ ही गंगा माँ ही यमुना।
माँ ही तीर्थ त्रिवेणी है।।
कर्जा माता का चुका सके।
बड़े-बड़े बलवान नहीं।।

नौ मास गर्भ में पाले माँ।
जाने कितने कष्ट उठाती है।।
मिन्नत करके भक्ति करके।
सन्तान का फल माँ पाती है।।
जिसने नहीं जाना माता को।
उसकी अपनों में शान नहीं।।

माता ही गुरु सबसे पहली।
जो प्रेम का पाठ पढ़ाती है।।
हर हाल में रक्षा करती है।
बेटों को धीर बंधाती है।।
जिस घर में माँ दु:ख पाती है।
उस घर में बसे भगवान नहीं।।

www.thearyasamaj.org

श्रेष्ठ जीवन

–डा. कन्हैयालाल पाण्डेय

यों तो जो जन्म लेता है जीवनपर्यंत जीता ही है, किन्तु कुछ दूसरों का भार हरने के लिए आते हैं तो दूसरे औरों के लिए भार बनकर। कुछेक स्वयं के जीवन के भार को ढोते रहते हैं। ठीक इसी प्रकार कुछ जीने भर के लिए खाते हैं तो कुछ जीते ही खाने के लिए हैं। जो औरों के लिए जीते हैं तथा मात्र जीवित रहने के लिए ही खाते हैं उनका ही जीवन सार्थक है। वे परोपकारी, संयमी जीव ही श्रेष्ठ जीवन जीते हैं। वे भद्र पुरुष अपने आचरण और सिद्धान्त में भेद नहीं रखते। ऐसे श्रेष्ठ जीवन के लिए आचरणीय पांच सिद्धांत जीव की सफलता को शीर्षता प्रदान करने के साधन कहे जा सकते हैं। ये हैं कर्म, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, और अभय। कर्म का मतलब है कि जीवन को चलाने के लिए कुछ न कुछ तो करना ही होगा। शरीर की रक्षा के लिए भी उद्यम करना होता है। जब कर्म करना अनिवार्य ही है तो मन लगाकर शुभ कर्म ही क्यों न करें। इस प्रकार के कर्म ही करें जो दूसरों को हितकर हों तथा ऐसे कर्म न करें जो दूसरों को अहितकर हों। सच मानें तो कर्म ही पूजा है। कर्म से ही व्यक्ति महान हो जाता है। प्रत्येक आचरण में सत्यता का अवलंबन कर्म को शक्तिशाली बनाता है, साथ ही प्राणीके मनोबल को ऊंचाई प्रदान करता है। विचारों में, वाणी में तथा आचरण में सत्य का प्रयोग सत्याचरण है। सत्य को पूर्णतया समझने वाले पुरुष को संसार में और कुछ जानना शेष नहीं रहता। अस्तेय पूर्णतया सत्य से ही जुड़ा बिंदु है। किसी की वस्तु को उसकी अनुमति के बिना प्रयोग में लाना अस्तेय आचरण की सीमा में आ जाता है। अपरिग्रह अर्थात् जीवन की सफलता के लिए वस्तुओं का, संपत्ति का अथवा धन का अनावश्यक संग्रह त्याज्य है। इसी को अपरिग्रह कहते हैं। इसमें विचारणीय भाव यह है कि संग्रहित वस्तु का उपयोग उसके हित में नहीं हो रहा जिसके हित में होना चाहिए। अपितु कुंठित रूप से एक स्थान पर पड़ी है जिसकी क्षमता दिनोंदिन क्षीण हो रही है। पांचवा गुण है अभय। श्रेष्ठ पुरुष के लिए भयरहित होने का सिद्धांत उपरोक्त चारों के होने पर स्वयमेव आचरण में आ जाता है। सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह धारण करने वाला व्यक्ति अपना कर्म बहुत आत्मविश्वास और मनोबल के साथ निर्भय होकर करेगा। भय विभिन्न प्रकार से प्राणी को पीड़ित करता है।

पाठकों से निवेदन

यदि आपका 'कमल ज्योति' हेतु शुल्क अभी तक जमा नहीं हुआ है या समाप्त हो गया है तो कृपया अपना शुल्क आजीवन 1100/- रुपये की दर से 'कमल ज्योति' के नाम मनिआर्डर/क्रास चैक से कार्यालय, डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 के पते पर शीध्र भेजें ताकि पत्रिका आपको लगातार मिलती रहे। अपना नाम, निवास का पूरा पता, कोड नम्बर, फ़ोन तथा मोबाईल नम्बर आदि सुन्दर व साफ़ शब्दों में लिखने का कष्ट करें। धन्यवाद! **-प्रबन्धक**

अभिमान एवं विनम्रता

एक पराक्रमी राजा अत्यंत दयालु एवं स्नेह भावना से प्रेरित थे। वह दूसरों के प्रति विनीत थे। राजा होते हुए भी अहंकार की भावना नहीं थी। जब भी कोई उनके दरबार में उपस्थित होता था वह राजा होते हुए भी सिर झुका कर अभिनन्दन करते थे। सभापति एवं सलाहकारों को राजा का यह आचरण पसंद नहीं था, वह राजा को समझाते थे आप राजा है, आपको आगन्तुक का झुक कर अभिनन्दन नहीं करना चाहिए। आपको मात्र हाथ हिला देना चाहिए। आप राजा हैं आपको यह शोभा नहीं देता।

राजा सुनकर हंस दिए, लेकिन वह अपने सभापति एवं सलाहकारों को परामर्श देना चाहते थे। अकस्मात एक दिन एक सिपाही का किसी ने गला काट दिया। राजा ने उस कटे हुए गले को एक थाली में रखवा दिया और उसे किसी सुन्दर वस्त्र से ढकवा दिया और सभापति को कहा कि इसे बेच आओ। सभापति उस थाली को लेकर बहुत से व्यापार केन्द्रों पर गया तो भी लेने से इन्कार कर दिया। फिर वह एक माँस बेचने वाले के पास गया। उसने भी मनुष्य का सिर खरीदने से इन्कार कर दिया। अंत में हार कर किसी गरीब के पास गया और उसे ध्सप का भी प्रलोभन दिया लेकिन उसने भूखे होते हुए भी सिर को लेने से इन्कार कर दिया। सभापति परेशान होकर दरबार लौट आये। राजा ने पूछा "आप कटे हुए सिर को बेच आये"। उत्तर मिला नहीं। "अरे दोस्त मुफ्त में बेच आते"। उत्तर मिला कोई भी लेने को तैयार नहीं हुआ। "अरे भाई प्रलोभन देकर बेच आते"। वह भी भरसक प्रयत्न किया लेकिन कोई भी लेने को तैयार नहीं हुआ।

राजा ने प्रेमपूर्वक समझाया कि मनुष्य का सिर जीवन्त होता है तो तब वह विनम्र होता है और मरणोपरान्त अकड़ जाता है अत: हमें अभिमान को त्याग कर जीवन्त रहते हुए विनम्र होना चाहिए। परमेश्वर हमसे यही आशा रखते हैं। अत: अभिमान को त्याग "राजा हो या रंक" अमीर हो या गरीब" "उच्च वर्ग का हो निम्न वर्ग" का सबको विनम्र होना चाहिए। परमेश्वर भी उनसे मित्रता करते हैं जिनमें अहंकार न हो।

www.thearyasamaj.org

TREES THAT WOOD

Once there were three trees on a hill in the woods. They were discussing their hopes and dreams when the first tree said, "Someday I hope to be a treasure chest. I could be filled with gold, silver and precious gems. I could be decorated with intricate carving and everyone would see the beauty."

Then the second tree said, "Someday I will be a mighty ship. I will take kings and queens across the waters and sail to the corners of the world. Everyone will feel safe in me because of the strength of my hull."

Finally, the third tree said, " I want to grow to be the tallest and straightest tree in the forest. People will see me on top of the hill and look up to my branches, and think of the heavens and God and how close to them I am reaching. I will be the greatest tree of all time and people will always remember me."

After a few years of praying that their dreams would come true, a group of woodsmen came upon the trees. When one came to the first tree he said, "This looks like a strong tree, I think I should be able to sell the wood to a carpenter"... and he began cutting it down. The tree was happy, because he knew that the carpenter would make him into a treasure chest.

At the second tree a woodsman said, "This looks like a strong tree, I should be able to sell it to the shipyard." The second tree was happy because he knew he was on his way to becoming a mighty ship.

When the woodsmen came upon the third tree, the tree was frightened because he knew that if they cut him down his dreams would not come true. One of the woodsmen said, " I don`t need anything special from my tree so I'll take this one", and he cut it down.

When the first tree arrived at the carpenters, he was made into a feed box for animals. He was then placed in a barn and filled with hay. This was not at all what he had prayed for. The second tree was cut and made into a small fishing boat. His dreams of being a mighty ship and carrying kings had ended. The third tree was cut into large pieces and left alone in the dark. The years went by, and the trees forgot about their dreams.

Then one day, a man and woman came to the barn. She gave birth and they placed the baby in the hay in the feed box that was made from the first tree. The man wished that he could have made a crib for the baby, but this manager would have to do. The tree could feel the importance of this event and knew that it had held the greatest treasure of all time. Years later, a group of men got in the fishing boat made from the second tree. One of them was tired and went to sleep. While they were out on the water, a great storm arose and the tree did not think it was strong enough to keep the men safe. Then men woke the sleeping man, and he stood and said "peace" and the storm stopped. At this time, the tree knew that it had carried the King of Kings in its boat.

Finally, someone came and got the third tree. It was carried through the streets as the people mocked the man who was carrying it. When they came to a stop, the man was nailed to the tree and raised in the air to die at the top of a hill. When Sunday came, the tree came to realize that it was strong enough to stand at the top of the hil and be as close to God as was possible, because Jesus had been crucified on it.

The moral of this story is that when things don`t seem to be going you way, always know that God has a plan for you. If you place your trust in Him, He will give you great gifts. Each of the trees got what they wanted. Just not in the way they had imagined. We do not always know what God`s plans are for us. We just know that His ways are not our ways, but His ways are always best.

आओ हाथ बढ़ाएं

- अवकाश वाले दिन घर की साफ-सफाई में परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग लें। इससे आपको अनावश्यक थकान का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही काम भी जल्दी समाप्त हो जाएगा।
- अगर बच्चे बड़े हैं, तो उनसे कहें कि वे अपना बिस्तर स्वयं लगाएं। साथ ही अपनी कॉपी-किताबों को भी संभालकर रखें। इससे आपकी अतिरिक्त ऊर्जा नहीं खर्च होगी।
- यदि घर में काम वाली बाई नहीं है, तो घर के सभी सदस्यों से कहें कि वे भोजन करने के पश्चात अपने बर्तन एक निश्चित स्थान पर रखें।
- रसोई घर में एक राइटिंग पैड रखें। अगर कोई वस्तु खत्म होने वाली है, तो इसमें लिख लें। बाजार जाते समय बस एक बार आपको इस लिस्ट में निगाह डालनी होगी। इससे आपके दिमाग पर ज्यादा जोर देने से बच जाएंगी।
- जिन वस्तुओं की अधिक जरूरत पड़ती है, उन्हें अधिक मात्रा में खरीदकर रखें।

www.thearyasamaj.org

गुरु गोविन्द सिंह रचित रामायण

–डॉ. (मेजर) बलबीर सिंह भसीन, पूर्व प्रति कुलपति, मगध वि.वि., बोधगया

छह शताब्दियों के मुगल शासन तन्त्र के अधीन देश अभूतपूर्व संकट से गुजर रहा था। देश-भक्ति से रहित हिन्दू राजा अपना स्वाभिमान और गौरव खो चुके थे। मुगलों की निरंकुश सत्ता ने भौतिक मूल्यों का विनाश कर दिया था। औरंगजेब की असहिष्णुता से स्थिति और भयवाह हो उठी थी। नैतिक सांस्कृतिक तथा बौद्धिक पतन के इस वातावरण में धर्म का उदात्त रूप तिरोहित हो गया था और साम्प्रदायिकता का तांडव हो रहा था। ऐसे वातावरण में युग पुरुष गुरु गोविन्द सिंह जी का आविर्भाव हुआ और उन्होंने तत्कालीन शासक के विरूद्ध आवाज उठायी। उन्होंने जहां अन्याय के विरूद्ध तलवार उठायी वहीं लेखनी भी। तलवार ने युद्ध क्षेत्र में जौहर दिखलाया और लेखनी ने 'दशम ग्रन्थ' के रूप में संसार को एक महत्वपूर्ण धर्म ग्रन्थ प्रदान किया।

दशम ग्रन्थ का रचनाकाल रीतिकाल के अन्तर्गत आता है जहां आश्रयदाताओं की प्रशंसा करना कवि-कर्म और कर्त्तव्य था और श्रृंगार की अभिव्यक्ति जिसका साहित्यिक लक्ष्य था। भक्ति केवल प्रभु-सुमिरन का बहाना। ऐसे वातावरण में दशम ग्रन्थ के अन्तर्गत गुरु गोविन्द सिंह जी ने 'कृष्णावतार' तथा 'रामावतार' जैसे अवतारों का विशेष उल्लेख चौबीस अवतारों की कथा के अन्तर्गत किया। राम-चरित्र पर जितने भी काव्य लिखे गए उनका लक्ष्य 'भक्ति प्रचार-प्रसार' या स्वान्तः सुखाय था, किन्तु गुरु गोविन्द सिंह जी ने राष्ट्र नायक के रूप में श्रीराम के स्वरूप का चित्रण कर उनके जीवन कथा का गान किया हे।

'रामावतार' कथा की प्रेरणा गुरुदेव को अपने पूर्ववर्ती ग्रन्थों से मिली। उन्होंने पदम् पुराण, वाल्मीकि रामायण, हृदयराम भल्ला द्वारा रचित हनुमान नाटक तथा भवभूति के उत्तर रामचरित आदि ग्रन्थों से ली फिर भी इनका प्रणयन इन सब ग्रन्थों से उपजीव्य सामग्री लेकर नहीं किया बल्कि लोक विश्रुत राम-कथा की रूप रेखा में ही रंग भरे हैं इसलिए यह न अन्य ग्रन्थों की तरह वर्णनात्मक है, न संवादात्मक। वे श्री राम की 'बीन' कथा कह कर ही सन्तुष्ट होना चाहते हैं इसका संकेत रचना प्रारम्भ करने से पूर्व ही कर दिया है-

अब शुद्ध चली रघुवंश कथा॥ जुपै छोर कथा कवि यहि कहै॥
इन बातन को इक ग्रंथ बढ़े॥ तिह से कही थो बीन कथा॥

'चौबीसावतार' के अन्तर्गत रामावतार गुरुदेव की दूसरी वृहदाकार रचना है क्योंकि 864 छन्दों में श्री राम की कथा वर्णित है। इसकी भाषा ब्रज है किन्तु अवधी और राजस्थानी भी प्रयुक्त है। कहीं-कहीं पंजाबी का भी प्रभाव दिखाई देता है। विष्णु के 24 अवतारों में से श्री कृष्ण के पश्चात् यह दूसरा ऐसा अवतार है जिसकी भारतीय संस्कृति में अधिक मान्यता प्राप्त है। इसकी रचना तिथि और रचना स्थल का वर्णन गुरुदेव ने निम्नलिखित शब्दों में किया है-

संमत सत्रह सहस पचावन॥ हाड़ वदी प्रथम सुख दावन॥
त्व प्रसादि करि ग्रंथ सुधारा॥ भूल परी लहु लेहु सुधारा॥
॥दोहर॥ नेत्र तुंग के चरन तर, सतद्रव तीर तरंग॥
सी भगवत पूरन कीयो, रधबर कथा प्रसंग॥

गुरुदेव ने युग की आवश्यकता को देखते हुए श्री राम के चरित्र का उल्लेख किया है। 'रामावतार' की कथा सर्गो में विभक्त न होकर 26 अध्यायों में वर्णित है। 'राम जन्म' से 'वन गमन' तक की रचना का आदि भाग, बनवास से 'अयोध्या वापसी' तक की घटनाएं मध्य भाग और 'सीता निवासन' से 'श्रीराम के महाप्रयाण' तक घटनाएं रचना का अन्तिम भाग है। रामावतार का मूल ढाचा लोकानुभूतिक है। इसके उतराकाण्ड से सम्बन्धित तीन घटनाएं लव-कुश युद्ध, लव-कुश द्वारा श्री राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुध्नादि हनन प्रसंग और सीता द्वारा सभी को जीवन प्रदान करना पदम् पुराण का प्रभाव है। रावण का चित्र बनाने वाली घटना का प्रेरणा स्त्रोत जैन रामायण से है। यह रचना इतिहासात्मक है अतः इसमें भाव प्रधान प्रसंग कम हैं और विभिन्न प्रसंगो पर समानुपातिक विचार भी नहीं है। गुरुदेव का इस रचना के पीछे एक निश्चित उद्देश्य है और वह राष्ट्र नायक श्री राम के चरित्र का वर्णन करते हुए असुर संहार करना। वर्तमान शासन तत्र का विनाश ही उनका अभीष्ट था अंत उसी के अनुसार रचना का लक्ष्य भी निर्धारित किया गया। इसी लक्ष्य के कारण वे घटनाएं ही प्रमुख तथा विस्तृत रूप में सामने आयी है जो राष्ट्र नायक श्री राम के चरित्र को उजागर करती है। इसी कारण यह कृति घटना संहार से जुड़ी है। इसी कारण यह कृति घटना प्रधान है, भाव प्रधान नहीं। यही कारण है कि यह वाल्मीकि रामायण तथा तुलसीदास के रामचरितमानस से भिन्न है।

धर्म, संस्कृति एवं स्वास्थ्य की मासिक पत्रिका

कमल ज्योति

डी-796, सरस्वती विहार,
दिल्ली-110034

अपने जीवन की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए 'कमल ज्योति' पत्रिका अवश्य पढ़े और इष्ट मित्रों को भी पढ़ाएं। सदस्य बनें और बनाएं।

www.thearyasamaj.org

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी वेद वेदांग गौरव सम्मान से सम्मानित

विलक्षण प्रतिभा के धनी, उच्चकोटि के वैदिक चिंतक, अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को आर्यसमाज महावीर नगर, नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित भव्य सत्संग समारोह में **'वेद वेदांग गौरव सम्मान'** से विभूषित किया गया।

समारोह के अध्यक्ष श्री ओ.पी. बब्बर जी (विधायक) मुख्य अतिथि श्री यशपाल आर्य जी (चेयरमैन एवं निगम पार्षद) श्री राजीव बब्बर जी (प्रवक्ता-भाजपा, दिल्ली प्रदेश) समाज प्रधान श्री राजपाल पुल्यानी जी एवं कोषाध्यक्ष श्री दिनेश आर्य जी ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को शाल, पुष्पमाला, प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान राशि देकर सम्मानित किया। यह सम्मान आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी की वैदिक धर्म प्रचार की सफल कनाडा यात्रा की सम्पन्नता के पावन पर्व पर उन्हें प्रदान किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री यशपाल आर्य जी ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि आचार्य श्री हम सबके प्रेरणाश्रोत हैं। वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं समाज सेवा में संलग्न आचार्य श्री की विद्वत्ता, साधुता, श्रेष्ठ जीवन पर हमें गर्व है। कनाडा में पहली बार आचार्य श्री ने 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ कराकर एक इतिहास रचा है। ऐसे विद्वान का सार्वजनिक अभिनन्दन करने में स्वयं को हम गौरववान्वित अनुभव करते हैं। इस अवसर पर मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विराट जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि मनुष्य की सफलता का रहस्य उसके रंग रूप गोरे या काले होने में नहीं, आन्तरिक गुणों में निहित है। जिसके पास जितनी आन्तरिक ऊर्जा होगी वह व्यक्ति जीवन में उतना ही अधिक सफल होगा सफलता को पाने के लिए धैर्य, आत्मसंयम, परिश्रम, दृढ़ विश्वास, लगन, कार्य के प्रतिनिष्ठा, त्याग, तपस्या, सूझबूझ, बुद्धिमता, दूसरों के प्रति सम्मान की भावना, कृतज्ञता, ईश्वर में विश्वास होना अति आवश्यक है। हम जितना भी जीएँ अच्छी तरह से जिएँ। लोगों के लिए जियें। लोग हमारे लिए जियें। कार्यक्रम के अध्यक्ष लोकप्रिय विधायक श्री ओ.पी. बब्बर जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी निःस्वार्थ समाज सेवी, उत्कृष्ट प्रवचन कर्ता, मानवीय गुणों के आगार, निष्कपट एवं कर्मठ जीवन व्यतीत करने वाले अत्यन्त लोकप्रिय वैदिक विद्वान है। इस शुभअवसर पर लोकप्रिय निगम पार्षद श्री यशपाल आर्य जी प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने समवेत रूप से महर्षि दयानन्द चैरिटेबल डिस्पेन्सरी और डायग्नास्टिक सैन्टर का उद्घाटन किया।

कार्यक्रम का कुशल संयोजन एवं संचालन श्री दिनेश आर्य, श्री ओम प्रकाश विद्यालंकार एवं श्री नरेन्द्र आर्य ने किया। इस अवसर पर अनेक आर्यसमाज एवं धार्मिक संस्थाओं के लोग बड़ी संख्या में मौजूद थे। समाज प्रधान श्री राजपाल पुल्यानी जी ने सभी का आभार प्रकट किया। शांतिपाठ के बाद जलपान की व्यवस्था की गई। **- दिनेश आर्य**

इन दिनों गाजर खाना है लाभदायक

व्यक्ति को अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपने दैनिक आहार में फलों का प्रयोग करना आवश्यक है। आमतौर पर व्यक्ति फलों का उपयोग इसलिए नहीं करता है कि वह समझता है कि ये अत्यंत महंगे होते हैं। यह धारण पूर्ण रूप से सत्य नहीं है क्योंकि बहुत से ऐसे फल हैं जो बहुत सस्ते और आसानी से हर जगह उपलब्ध होने वाले होते हैं। उनमें उतने ही गुण मिलते हैं जितने महंगे दामों वाले फलों में होते हैं। प्रकृति की यह अद्भुत व्यवस्था है कि वह प्रत्येक मौसम में ऐसे फल पैदा करती है जिसका सेवन उस ऋतु में करना शरीर और स्वास्थ्य के लिए लाभदायक सिद्ध होता है। ऐसा ही शीत ऋतु में पाया जाने वाला एक फल है गाजर।

गाजर जमीन में उगाया जाने वाला फल है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि जमीन में 16 प्रकार के पाये जाने वाले लवणों में से अकेले गाजर में केवल 12 लवण पाए जाते हैं। गाजर में विटामिन ए अधिक मात्रा में पाया जाता है। गाजर आंखों के रोग, दांतो के रोग, चर्म रोग, त्वचा के रोग, पीलिया, पेट के रोग एवं गठिया आदि अनेक रोगों में लाभदायक हैं। इसका ताजा उस रोगी को देने से काफी लाभ मिलता है। इसका रस हमारे शरीर में आसानी से पच जाता है। गाजर को हमेशा साफ पानी से धोकर छिलका सहित कच्चा खाना चाहिए। संभव हो सके तो गाजर का रस निकालकर लेना चाहिए क्योंकि इसमें गाजर के पूरे तत्व मिल जाते हैं प्रति 100 ग्राम गाजर में लगभग 49 कैलोरी ऊर्जा पायी जाती है। ❑ गाजर में संतुलित भोजन के पूर्ण तत्व पाये जाते हैं। ❑ गाजर का रस पीने से वीर्य गाढ़ा होता है। ❑ गाजर फेफड़ों के रोगों व कब्ज आदि में लाभदायक है। ❑ गर्भवती स्त्री को गाजर खिलाने से बच्चा खूबसूरत व स्वस्थ पैदा होता है। ❑ स्त्रियों की रूकी हुई माहवारी में गाजर का बीज गर्म पानी से देने से लाभ मिलता है। ❑ गाजर सस्ता व सर्वत्र आसानी से सुलभ होने वाला फल है। ❑ गाजर का रस पीने से आंखों की रोशनी बढ़ती है। ❑ गाजर का रस हृदय की कार्य-प्रणाली को तेजी के साथ बढ़ाता है। ❑ गाजर के रस को शहद के साथ मिलाकर लेने से यौन संबंधी शिकायतें दूर होती है एवं पौरूश शक्ति बढ़ती है। इसको अधिक से अधिक खाकर लाभ प्राप्त करना चाहिए।

www.thearyasamaj.org

RNI No.DEL BIL/2008/25452 Total Pages 12 ओ३म् Posting Date 5 or 6 January 2014 DL (N)0225/2012-14

प्रेषक Date of Publication: 25 December 2013

कमल ज्योति

जनवरी 2014 (मासिक) एक प्रति का मूल्य 10 रुपये

डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034,

फोन : 27017780

सेवा में

शादी की वर्षगांठ पर बधाई

श्री हरमोहन सिंह ठुकराल व श्रीमती दर्शन कौर की **50वीं शादी की वर्षगांठ** दिनांक 29.09.2013 को आर.डब्लू.ए., विकासपुरी (न्यू कृष्णा पार्क) सीनियर सीटिजन की तरफ से मनाई गई।

'कमल ज्योति' परिवार की तरफ से 50वीं वर्षगांठ की बधाई। - **अतुल आर्य**

लोहड़ी का त्योहार

अज लोहड़ी दा आया-आया है त्योहार नी सईयों।
गाईये गीत खुशी दे नाल, नर नार नी सईयों।।

तिल चावल सी मक्की पकदी, अजदिन खेतां सारे,
इकट्ठी करके ल्यादें घर विच, सब मिल बैठे विचारे,
करके सफाई इसदी कर दे, ओ तैयार नहीं सईयों।।

तिल चावल गुड़ मक्की मिला के, यज्ञ कर दे सी सारे,
सब तरहां दी सामग्री ल्याके, आहुति दे दें सारे,
वेदां दे मन्त्र पढ़ दे, ओम उच्चारनी सईयों।।

शरद ऋतु जाड़ा पाया अपनी दिखाई जवानी,
ठरन लगे सब हथ और पैर, याद आई सानूं नानी,
पाओ गर्म कपड़े ते ठण्डे उतारनी सईयो।।

जिन्हां दे ब्याह ते जम्मन दी, अज पहली लोहड़ी आई,
नर नारी और बाल वृद्ध सब, मिलके देओ बधाई,
रेवड़ियां ते चिड़वे खाओ, गावो मंगलचार नी सईयों।।

घर-घर यज्ञ रचावो सारे, लोहड़ी सफल मनाओ,
ऋषि मुनियां ने एहो दसया, वेद दी रीति चलाओ,
"देवी" कीती ऐ तुहाडे अग्गे, ऐहो पुकार नी सइयों।।

-अश्विनी कुमार नांगिया

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, पुष्पांजलि एंक्लेव, पीतमपुरा का 27वाँ वार्षिकोत्सव सौल्लास 5 दिसम्बर से 8 दिसम्बर 2013 तक मनाया गया। 1 दिसम्बर को प्रात: 6.30 बजे प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें प्रभु भक्ति तथा ईश्वर भक्ति के भजन गाये गए। 5 दिसम्बर से सायं 7.30 बजे आचार्या अमृता जी के भजन हुए तथा आचार्य अर्जुन देव जी वर्णी ने वेदादि शास्त्रों पर सारगर्भित प्रवचन किए। प्रतिदिन प्रात: आचार्य अर्जुन देव जी वर्णी ने यज्ञ कराया और बताया कि विधिवत शास्त्रोक्त किया हुआ यज्ञ ही सार्थक होता है। 5 दिसम्बर को प्रात: यज्ञ के पश्चात ओ३म् ध्वज का ध्वजारोहण प्रसिद्ध समाज सेवी श्री जवाहर लाल लूथरा जी द्वारा किया गया। 8 दिसम्बर को समापन दिवस पर हवन, भजन और प्रवचन का सुन्दर क्रम रहा। आचार्य अर्जुन देव जी वर्णी ने वेदादि प्रमाणों द्वारा ईश्वर की सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमान आदि गुणों की विस्तृत विवेचना की। आचार्य जी ने प्रतिदिन अनिवार्य रूप से दोपहर में एक घंटे का समय शंका समाधान के लिए रखा। प्रो. महेश विद्यालंकार जी ने भी वेदों के उपदेश, संदेश और आदेशों पर चलने को प्रेरित किया। श्री अनिल आर्य जी (केन्द्रीय आर्य युवक परिषद) ने भी आर्य समाज के संगठन को मजबूत बनाने पर बल दिया। श्री जोगिन्दर खट्टर (उ.प.दि. वेद प्रचार मंडल) ने भी आर्य समाज के सत्संगो में संख्या बढ़ाने के प्रयासों को करने के लिए प्रेरित किया। दोपहर 1 बजे 8 दिसम्बर को ऋषि लंगर के पश्चात वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

स्वामी-माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक एल.आर. आहूजा, चलभाष : 9810454677 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-5, दूरभाष : 41548504 मो. 9810580474 से मुद्रित। **कार्यालय : डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 से प्रकाशित**